एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

भिण्डी के प्रमुख कीट तथा रोगों का एकीकृत प्रबंधन

(*डॉ. सुरेश जाखड़[1] एवं प्रदीप कुमार कुमावत[2])

[1]राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर (श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर)

[2]शेर ए कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू

* jakhars.692@gmail.com

भिंडी के प्रमुख रोगों मे पीत शीरा मोजैक वाइरस (यलो वेन) एवं चूर्णिल आसिता तथा कीटों में प्ररोहे एवं फल छेदक कीट, मोयला, हरा तेला सफेद मक्खी, रेड स्पाइडर माइट मुख्य है।

भिण्डी का प्ररोह एवं फल छेदक :

इस कीट का प्रकोप वर्षा ऋतु में अधिक होता है। प्रारंभिक अवस्था में इल्ली कोमल तने में छेद करती है जिससे पौधे का तना एवं शीर्ष भाग सूख जाता है। फूलों पर इसके आक्रमण से फूल लगने के पूर्व गिर जाते है। इसके बाद फल में छेद बनाकर अंदर घुसकर गूदा को खाती है। जिससे ग्रसित फल मुड़ जाते हैं और भिण्डी खाने योग्य नहीं रहती है।

प्रबंधन

- क्षतिग्रस्त पौधो के तनो तथा फलो को एकत्रित करके नष्ट कर देना चाहिए।
- मकड़ी एवं परभक्षी कीटों के विकास या गुणन के लिये मुख्य फसल के बीच-बीच में और चारों तरफ बेबीकॉर्न लगायें जो बर्ड पर्च का भी कार्य करती है।
- फल छेदक की निगरानी के लिये 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगायें।
- फल छदे क के नियत्रंण के लिये *ट्राइकोग्रामा काइलाेनिस* एक लाख प्रति हेक्टयेर की दर से 2-3 बार उपयोग करें तथा साइपरमेथ्रिन (4 मि.ली./10 ली.) या इमामेक्टिन बेन्जोएट (2 ग्रा./10 ली0) या स्पाइनोसैड (3 मि.ली./10 ली.) का छिडकाव करें।
- क्युनालफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. क्लोरपायरिफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. अथवा प्रोफेनफॉस 50 प्रतिशत ई.सी. की 5 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी के मान से छिडकाव करें तथा आवश्यकतानुसार छिडकाव को दोहराएं।

भिण्डी का फुदका या तेला

इस कीट का प्रकोप पौधो के प्रारम्भिक वृध्दि अवस्था के समय होता है। शिशु एवं वयस्क पौधे की पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते हैं, जिसके कारण पत्तियां पीली पड़ जाती हैं और अधिक प्रकोप होने पर मुरझाकर सूख जाती हैं।

प्रबंधन

- नीम की खली 250 कि.ग्रा. प्रति हेक्टयेर की दर से अंकुरण के तुरंत मिटटी मे मिला देना चाहिए तथा बुआई 30 दिन बाद फिर मिला देना चाहिए
- बुआई के समय कार्बोफयुराॅन 3जी 1 कि.ग्रा. प्रति हेक्टयेर की दर से मिटटी मे मिलाने इस कीट का काफी हद तक नियंत्रण होता है।

सफेद मक्खी :

ये सूक्ष्म आकार के कीट होते है तथा इसके शिशु एवं प्रौढ पत्तियों कोमल तने एवं फल से रस को चूसकर नुकसान पहुंचाते है। जिससे पौधो की वृध्दि कम होती हौ जिससे उपज में कमी आ जाती है। तथा ये येलो वेन मोजैक वायरस बीमारी फैलाती है।

प्रबंधन

- नीम की खली 250 कि.ग्रा. प्रति हेक्टयेर बीज के अंकुरण के समय एवं बुआई के 30 दिन के बाद नीम बीज के पावडर 4 प्रतिशत या 1 प्रतिशत नीम तेल का छिडकाव करे।
- आरम्भिक अवस्था में रस चूसने वाले किटो से बचाव के लिये बीजों को इमीड़ाक्लोप्रिड या थायामिथोक्सम द्वारा 4 ग्रा. प्रति किलो ग्राम की दर से उपचारित करें।
- कीट का प्रकोप अधिक लगने पर आक्सी मिथाइल डेमेटान 25 प्रतिशत ई.सी. अथवा डायमिथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. की 5 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी मे अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल अथवा एसिटामिप्रिड 20 प्रतिशत एस. पी. की 5 मिली./ग्राम मात्रा प्रति 15 लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें एवं आवश्यकतानुसार छिडकाव को दोहराएं।

रेड स्पाइडर माइट

यह माइट पौधो की पत्तियों की निचली सतह पर भारी संख्या में कॉलोनी बनाकर रहता हैं। यह अपने मुखांग से पत्तियों की कोशिकाओं में छिद्र करता हैं । इसके फलस्वरुप जो द्रव निकलता है उसे माइट चूसता हैं। क्षतिग्रस्त पत्तियां पीली पडकर टेढ़ी मेढ़ी हो जाती हैं। अधिक प्रकोप होने पर संपूर्ण पौधा सूख कर नष्ट हो जाता हैं।

प्रबंधन

- इसकी रोकथाम हेतु डाइकोफॉल 5 ईसी. की 2.0 मिली मात्रा प्रति लीटर अथवा घुलनशील गंधक 2.5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें एवं आवश्यकतानुसार छिडकाव को दोहराएं ।

जड ग्रन्थि सुत्रकुमि

जड ग्रन्थि सुत्रकुमि पौधो की जडो मे घाव बना देते है। जिसके कारण पौधे मिटटी से जल एवं पोषक तत्वो का अवशोषण नही कर पाते परिणाम स्वरूप पौधे पीले पड जाते है एवं पोषक तत्वो की कमी के फलस्वरूप पौधो की वृध्दि की रूक जाती है तथा फल का आकार छोटा हो जाता है।

प्रबंधन

- फसल चक्र मे अनाज वाली फसलो को लगाना चाहिए।
- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई 2 से 3 बार करनी चाहिए।
- जैव किटनाशक स्युडोमोनास फलोरीसेन्स 10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करना चाहिए।
- पौधो के प्रारंभिक वृध्दि अवस्था के समय सिचाई से पहले नीमागाँन 30 लीटर प्रति हेक्टयेर छिडकाव करना चाहिए।

प्रमुख रोग

पीत शिरा रोग (यलो वेन मोजैक वाइरस)

यह भिण्डी की सबसे महत्वपूर्ण एवं अधिक हानि पहुचानें वाली विषाणु जनित बीमारी है जो सफेद मक्खी दवारा फैलती है संक्रमण जल्दी होने पर 20-30 प्रतिशत तक उपज मे हानि होती है। तथा इस रोग के लक्षण पौधो के सभी वृध्दि अवस्था मे दिखाई देती है। पत्तियों की शिराएं पीली पडने लगती है। एवं पत्तियों मे एक जाल जैसी सरंचना बन जाती इसके बाद प्रकोप बढने पर पौधो सभी पत्तिाया एवं फल भी पीले रंग के हो जाते है और पौधे की बढवार रुक जाती है।

प्रबंधन

- जुन के अन्तिम सप्ताह या फिर जुलाई के पहले सप्ताह मे ही बीज की बुआई कर देनी चाहिए।
- पीत शिरा रोग के प्रतिरोधी किस्म जैसे अर्का अनामिका, वर्षा उपहार, अर्का अभय, पूसा ए-4 तथा प्रभनी क्रांति लगाने चाहिए
- आक्सी मिथाइल डेमेटान 25 प्रतिशत ई.सी अथवा डायमिथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. की 5 मिली प्रति लीटर पानी में अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. अथवा एसिटामिप्रिड 20 प्रतिशत एस. पी. की 5 मिली./ग्राम मात्रा प्रति 15 लीटर पानी

चूर्णिल आसिता

इस रोग में भिंडी की पुरानी निचली पत्तियों पर सफेद चूर्ण युक्त हल्के पीले धब्बे पडने लगते है। ये सफेद चूर्ण वाले धब्बे काफी तेजी से फैलते है।

प्रबंधन

- इसका नियंत्रण न करने पर पैदावार 30 प्रतिशत तक कम हो सकती है। इसके नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक 5 ग्राम अथवा हैक्साकोनोजोल 5 प्रतिशत ई.सी. की 1.5 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 2 या 3 बार 12-15 दिनों के अंतराल पर छिडकाव करना चाहिए।

आर्द्र गलन

ठण्डी एवं वर्षा वाले मौसम बादल, अधिक नमी, नम एवं कठोर मिटटी इस तरह की समस्या होने पर यह रोग अधिक फैलता है इस रोग के कारण पौधो की अंकुरण क्षमता कम हो जाती है। तथा पौधे उगते ही या उगने से पहले ही मर जाते है। पौधे के तने का वह जहा से वह मिटटी के जुडा रहता उसी स्थान ने घाव बनने के कारण पौधे मर जाते है। इस रोग का फैलाव मिटटी मे पाये जाने वाले फफुंद पाइथियम या राईजोक्टोनिया तथा पर्यावरण स्थिति पर निर्भर करता है।

प्रबंधन

- आवश्यकता से अधिक सिचाई नही करनी चाहिए।
- ट्राइकोडर्मा विरीडी 3 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज दर से बीजोप्चार करना चाहिए।
- डाइथेन एम-45 0.2 प्रतिशत एवं बैवस्टीन 1 प्रतिशत की दर से मिटटी मे मिलाने से इस रोग मे कमी आती हैं।

फ्युसेरियम विल्ट (म्लानी)

यह रोग एक फफुद जनित रोग है जो लम्बे समय तक मिटटी मे बने रहते है। शुरूआत मे पौधे अस्थाई रूप से सूखने लगते है तथा बाद मे सक्रमण बढने पर पौधे एवं पतियाँ पीली पडने लगती है तथा कवक पौधे के जड प्रणाली पर आक्रमण करते जिससे पौधे मे जल सवंहन अवरूध्द हो जाता है जिससे पौधे पुर्णत मर जाते है।

प्रबंधन

- लगातार एक ही जगह पर भिण्डी की खेती नही करनी चाहिए।
- फसल चक्र का प्रयोग करना चाहिए।
- रोग अधिक दिखने पर केराथेन 6 ग्रा प्रति 10 ली. पानी या बैवेस्टीन 1 ग्रा. प्रति ली. पानी मे मिलाकर 5-6 दिन के अंतराल मे 3 बार छिडकाव करना चाहिए।